

ईशावास्योपनिषद्

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Eshaavaasyopanishad

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

ईशावास्योपनिषद् में ईश्वर के सर्वव्यापी गतिरहित स्वरूप का वर्णन करते हुए ओ३म् को ईश्वर का प्राथमिक नाम घोषित किया गया है। आचार व्यवहार के मूल सिद्धान्तों का उपदेश देते हुए, सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखने की और जीवन के हर पल को अन्तिम पल की तरह जीने की सलाह दी गई है। अविनाशी प्रभु का ध्यान ही जन्म मृत्यु के चक्र से निकलने का मार्ग है। इसके अतिरिक्त प्रभु की मूर्खों से दूरी एवम् विद्वानों से समीपता बतलाते हुए आत्मज्ञान की अवेहलना करने के दोष दिखाए गए हैं। अज्ञान से विद्या की ओर ले जाने वाले चक्र के महत्त्व को बताते हुए विद्या से उत्पन्न अहंकार के प्रति सचेत किया गया है।

यह उपनिषद् अधिकांशतः यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय से लिया गया है। कुछ मन्त्रों में एक दो शब्द यजुर्वेद से भिन्न हैं फिर भी उनकी उत्पत्ति यजुर्वेद से ही मानी गई है।

Synopsis

In the Eeshaavaasyopaniṣhad, the sages have described the all pervading, omnipresent Supreme Being whose primary name is OM. Enumerating the basic code of conduct, they have advised everyone to desire to live for one hundred years for performing God's work and to live every moment of life as if it were the last. Keeping that indestructible God in our mind all the time, is the only way to attain salvation from the bondage of the cycle of life and death. While stating that God is very far from the ignorant and very close to the learned, they highlight the ills of ignoring the universal knowledge. While describing the importance of the virtuous cycle leading from ignorance to illumination, everyone is cautioned against the ego some may get after improper implementation of the knowledge acquired.

Most of the mantras in this upaniṣhad are from Yajurveda chapter 40. Even though a couple of words in a few mantras are different from the text in Yajurveda, their origin is still attributed to Yajurveda.

प्रथम मन्त्र में ईश्वर के आस्तित्व और उसको जानने के बाद कैसा व्यवहार करें, यह बताया है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥१॥

यजुः ४०.१

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किम् च जगत्याम् जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ॥१॥

(ईशा) परम पिता परमेश्वर (इदम्) इस ब्रह्माण्ड में, (यत् किम्) जो भी (जगत्याम् जगत्) अति विशाल से लेकर अतिसूक्ष्म जगत हैं, (सर्वम्) उन सभी में (वा स्यम्) निवास करता है और उनको आच्छादित भी करता है। (तेन) उस परमेश्वर द्वारा (त्यक्तेन) मनुष्यों के लिए छोड़े गए भोग्य को त्याग की भावना से बिना लिप्त हुए (भुञ्जीथाः) भोगो (च) और (कस्य स्विद्) किसी के भी (धनम्) धन की (गृधः) अभिलाषा (मा) मत करो।

The first mantra describes the omnipresence of God and defines some basic rules of conduct.

**1. Om eeshaa vaasyam-idam sarvam
yat-kiñcha jagatyaañ jagat
tena tyaktena bhuñjeethaa
maa gridhaḥ kasya svid-dhanam**

Yajur 40.1

(eeshaa) God (vaasyam) pervades and covers (sarvam) everything that exists (idam) here in this universe, (kiñcha) whatever (yat) those entities may be, (jagatyaañ) large celestial bodies or (jagat) smaller entities contained within an entity; (tena) in that universe (bhuñjeethaa) enjoy (tyaktena) with a feeling of detachment, whatever has been left for you by God and (maa) never (gridhaḥ) covet (kasya svid) someone else's (dhanam) wealth.

दूसरे मन्त्र में वेदोक्त कर्म की उत्तमता दर्शाई है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छुतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

यजुः ४०.२

कुर्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः ।

एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

(इह) इस संसार में प्रसन्नतापूर्वक (शतम्) सौ (समाः) वर्ष (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा रखते हुए (एव) केवल (कर्माणि) वेदोक्त कर्म (कुर्वन्) करो। (एवम्) और (त्वयि) तेरे (नरे) अपने स्वार्थवश (कर्म) कोई भी कर्म (न) न (लिप्यते) करने से (इतः अन्यथा) अन्य विपथन (न) नहीं (अस्ति) रहते।

The second mantra describes the importance of selfless actions.

**2. Om kurvann-eveha karmaaṇi
jijeeviṣhech-chatam samaaḥ
evan tvayi na-anyatheto'sti
na karma lipyate nare**

Yajur 40.2

(eva) In this World, (jijeeviṣhech) with a desire to happily live for (chatam) one hundred (samaaḥ) years, (kurvann) perform (ev) only (karmaaṇi) virtuous actions as sanctified in the Vedas (evan) and in order (eto) to (na asti) remove (aanyath) any diversions from the righteous path, (tvayi) you (na) should never (lipyate) be engaged (karma) in performing actions (nare) for selfish reasons.

तीसरे मन्त्र में बतलाया है कि आत्मिक ज्ञान को न मानने वालों की क्या गती होती है।

असुर्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः ।

ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥

यजुः ४०.३

असुर्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृता इत्याऽवृताः ।

तान् ते प्रेत्येति प्रड्यत्य अभिगच्छन्ति ये के च आत्महन इत्यात्महनः जनाः ॥३॥

(ते) वे (जनाः) मनुष्य जो (तमसा) अज्ञान के (अन्धेन) अन्धकार से (आवृता) ढके हुए हैं (च) और (के) कोई (आत्महन) आत्मिक ज्ञान के विरुद्ध आचरण करने वाले हैं, (ये असुर्याः) दैत्य राक्षस पिशाच आदि (नाम) नामों से जाने जाते हैं। (ते) वे (प्रेत्येति) मृत्योपरान्त और जीवित अवस्था में भी (तान्) इनही अन्धकारपूर्ण (लोकाः) लोको को (अभिगच्छन्ति) प्राप्त होते हैं।

The third mantra describes the fate of people who engage in self deprecating behavior by ignoring the divine knowledge.

**3. Om asuryyaa naama
lokaa'andhena tamas-aavṛitaah
taanste pretya-abhi-gachchhanti
ye ke chaatmahano janaah**

Yajur 40.3

(ye) Those (*janaah*) humans whose (*ke aatmahano*) conduct is contrary to the what is sanctified in the Vedas (*ch*) and who are (*aavṛitaah*) covered in (*andhena*) darkness (*tamas*) of ignorance (*naama*) are called (*asuryyaa*) demons; (*te*) they (*pretya*) on death and even during life, (*abhigachchhanti*) go to (*taans*) those similar dark (*lokaa*) Worlds.

चौथे मन्त्र में ईश्वर के साक्षात्कार के विषय में बताया है।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।

तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्पो मातरिश्वा दधाति ॥४॥

यजुः ४०.४

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एनत् देवाः आप्नुवन् पूर्वम् अर्षत्।

तत् धावतः अन्यान् अति एति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति॥४॥

वह (एकम्) एकमात्र (अनेजत्) गतिरहित दृढ परमात्मा जो (मनसः) मन की गति से भी (जवीयः) तेज सभी स्थानों पर (पूर्वम्) पहले से ही (अर्षत्) विद्यमान है, (एनत्) वह (देवाः) दृष्टि आदि इन्द्रियों से (आप्नुवन्) प्राप्त (न) नहीं होता । (तत्) वह (तिष्ठत्) सर्वत्र स्थिर हो अपनी सर्वव्यापकता और विस्तार के कारण (धावतः) विषयों के पीछे भागती हुई (अन्यान्) इन्द्रियों का (अति एति) उल्लङ्घन कर जाता है। स्वयं भाररहित होकर भी (तस्मिन्) वह (मातरिश्वा) वायुमण्डल में (अपः) जल के भार को (दधाति) धारण करता है।

Fourth mantra discusses the ways to get to God.

**4. Om anejad-ekam manaso javeeyo
na-inad-devaa'aapnuvan poorvam-arṣhat
tad-dhaavato'nyaan-atyeti tiṣṭhat-
tasminn-apo maatarishvaa dadhaati**

Yajur 40.4

(ekam) The One (anejad) unwavering God, who is (javeeyo) faster than (manaso) mind (arṣhat) already exists (poorvam) everywhere before anyone can reach there mentally or physically; (inad) that God (na) cannot be (aapnuvan) perceived through (devaa) senses. By virtue of his (tiṣṭhat) steadfast omnipresence and vastness, (tad) he is (atyeti) beyond (anyaan) the senses that are (dhaavato) chasing the material desires. (tasminn) He even while being weightless himself, (dadhaati) holds all of (apo) the water in (maatarishvaa) the atmosphere.

पाँचवे मन्त्र में ईश्वर के बारे में विद्वानों और अविद्वानों के विचार बताए हैं।

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके ।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

यजुः ४०.५

तत् एजति तत् न एजति तद् दूरे तत् ऊँइत्यूँ अन्तिके।

तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् ऊँइत्यूँ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥५॥

(तत्) वह (न) स्वयं न (एजति) गति करते हुए भी (तत् एजति) इस ब्रह्माण्ड में सबको चलायमान रखता है। (तत्) वह (दूरे) अविद्वानों से बहुत दूर परन्तु (ऊँइत्यूँ) विद्वानों के ही (तत् अन्तिके) अत्यन्त समीप है। (तत्) वह (सर्वस्य) सबके के (अन्तः) अन्दर और (बाह्यतः) बाहर (ऊँइत्यूँ) भी (अस्य) विद्यमान है।

Fifth mantra discusses God's closeness to the learned and distance from the ignorant.

5. Om tad-ejati tan-naijati
tad doore tadv-antike
tad-antarasya sarvasya
tadu sarvasya-asya baahyataḥ

Yajur 40.5

(tan) He (na) does not need to (ijati) move but (tad) he is (ejati) the causal force behind the movement of any entity; (tad) He (doore) seems very far to the ignorant but (tadv-antike) is very close to the learned; (tad) He (asya) exists (antarasya) inside (sarvasya) everyone (u) as well as (baahyataḥ) outside (sarvasya) everyone.

छठे मन्त्र में पुनः ईश्वर की सर्वव्यापकता के विषय में कहा है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥६॥

यजुः ४०.६

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मन् एव अनुपश्यतीत्यनुपश्यति ।

सर्वभूतेष्विति सर्वभूतेषु च आत्मानम् ततः न विजुगुप्सते ॥६॥

(यः) जो विद्वान् (आत्मन्) परमात्मा के अन्दर (एव) ही (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणीयों व अप्राणीयों को (अनुपश्यति) ध्यानदृष्टि से देखता है (च) और (तु) जो (सर्व) सब (भूतेषु) प्रकृत्यादि पदार्थों में भी (आत्मानम्) परमात्मा को देखता है (ततः) वह (विजुगुप्सते) पाप में (न) नहीं पड़ता।

Sixth mantra again describes the omnipresence of God.

**6. Om yastu sarvaani bhootaany-
aatmann-eva-anupashyati
sarva-bhooateshu chaatmaanam
tato na vijugupsate**

Yajur 40.6

(yastu) That learned person who (eva) definitely (anupashyati) perceives (sarvaani) the entire (bhootaany) creation (aatmann) as a part of God (ch) and (aatmaanam) God inside (sarva) every (bhooateshu) being and non living thing (tato) that person (na) never (vijugupsate) acts sinfully.

सातवें मन्त्र में यह बतलाया है कि सभी प्राणियों के साथ स्वयं अपने जैसा व्यवहार करना ही उचित है।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥

यजुः ४०.७

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानत इति विजानतः ।

तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वमित्येकत्वम् अनुपश्यत इत्यनुपश्यतः ॥७॥

(यस्मिन्) जो विद्वान् (सर्वाणि) सभी (भूतानि) प्राणीमात्र को परमात्मा के सहचारी जान अपने (एव) ही (आत्मा) आत्मतुल्य (अभूत्) मानते हैं, उस (एकत्वम्) एकमात्र परमेश्वर में (विजानतः) ध्यानदृष्टि से अद्वितीय भाव (अनुपश्यतः) देखने वाले (तत्र) उन योगियों को (कः) कैसा (मोहः) मोह और (कः) कैसा (शोकः) शोक ।

Seventh mantra advises to treat all being as one would treat his/her own self.

**7. Om yasmint-sarvaāṇi bhootaany-
aatma-iva-abhood-vijaanataḥ
tatra ko mohah kaḥ shoka'
eka-tvam-anu-pashyataḥ**

Yajur 40.7

(yasmint) Those learned humans who (abhood) perceive (sarvaāṇi) every (bhootaany) being as God's companion (aatma-iva) and treat them as their own self, and (anu-pashyataḥ) view (eka-tvam) the unparalleled qualities of that one God (vijaanataḥ) through meditation, (ko) what is (mohah) attachment and (kaḥ) what is (shoka) sorrow (tatra) to them.

आठवें मन्त्र में परमेश्वर के गुणों का विस्तृत वर्णन कर उसके उनही गुणों के कारण पूजा के योग्य बताया गया है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः

॥८॥

यजुः ४०.८

सः परि अगात् शुक्रम अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धमित्यपापविद्धम् ।

कविः मनीषी परिभूरिति परिभूः स्वयम्भूरिति स्वयम्भूः याथातथ्यत इति याथातथ्यतः अर्थान् वि अदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

जो (परिः) सब जगह (अगात्) गया हुआ, (शुक्रम्) शुद्ध स्वरूप (अकायम्) कायारहित, (अव्रणम्) छिद्ररहित, (अस्नाविरम्) कर्म बन्धनों से परे, (शुद्धम्) पवित्र, (अपापऽविद्धम्) पाप से दूर, (कविः) सर्वव्यापक, (मनीषी) सब जीवों की मनोवृत्ति जानने वाला, (परिभूः) दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला, (स्वयम्भूः) अनादि, (शाश्वतीभ्यः) उत्पत्ति और विनाश से रहित, (याथाऽतथ्यतः) यथार्थ भाव से (समाभ्यः) सबके लिए (अर्थात्) वेदों के ज्ञान को (वि अदधात्) विशेष कर बनाने वाला, (सः) वही परमेश्वर उपासना के योग्य है।

Eighth mantra details various abstract qualities of God and declares that he is the only one to be worshipped because of those qualities.

**8. Om sa pary-agaach-chukram-akaayam-avranam-asnaaviram
shuddham-apaapa-viddham
kavir-maneeṣhee pari-bhooh
svayam-bhoor-yaathaa-tathyato'rthaan
vy-adadhaach-chaashvateebhyaḥ samaabhyaḥ Yajur 40.8**

The supreme being who is (agaach) already present (pary) all over, is (chukram) pure, (akaayam) without any physical body, (avranam) without any defects, (asnaaviram) beyond all actions, (shuddham) devoid of any impurities, (apaapa-viddham) distant from all sins, (kavir) omnipresent, (maneeṣhee) all knowing, (paribhooh) destroyer of evil, (svayambhoor) forever existing and never born, (chaashvateebhyaḥ) indestructible, (vyadadhaach) provider of the (yaathaataathyato) true (arthaan) knowledge through Vedas to (samaabhyaḥ) everyone; (sa) he is the only who should be worshipped.

नवें मन्त्र में अविद्या अथवा विद्या के अहंकार, दोनों से होने वाली हानि के विषय में बताया गया है।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते ।

ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायां रताः ॥९॥

यजुः ४०.१२

अन्धम् तमः प्र विशन्ति ये अविद्याम् उपासन्त इत्युपऽआसते ।

ततः भूयऽइवेति भूयऽइव ते तमः ये ऊँऽइत्यु विद्यायाम् रताः ॥९॥

(ये) जो लोग (अविद्याम्) अज्ञान में (उपऽआसते) रहते हैं और उससे बाहर निकलने का प्रयास नहीं करते, वह (अन्धम् तमः) अन्धकार में (प्र विशन्ति) जीते हैं और (ये) वह ज्ञानी जो (विद्यायाम्) विद्या प्राप्ति से (रताः) अहंकारी हो जाते हैं (ते) वह (ततः) इससे (भूयःऽइव ऊँ) भी अधिक (तमः) अन्धकार मय जीवन जीते हैं।

Ninth mantra advises about the harm from the ignorance or the improper use of knowledge.

**9. Om andhan-tamaḥ pra vishanti
ye'vidyaam-upaasate
tato bhooya'iva te**

tamo ya'u vidyaayaam rataaḥ

Yajur 40.12

(ye) Those who (upaasate) prefer to stay (avidyaam) in ignorance, (pra vishanti) live their life (andhan tamaḥ) in darkness; however, (ya) those who (rataaḥ) become egotistical (vidyaayaam) after attaining knowledge, (te) they (bhooya) lead (tato) into (iva) even (u) greater (tamo) darkness.

दसवें मन्त्र में अज्ञानमय जीवन और ज्ञान के दुरुपयोग, दोनों ही की हानि के विषय में बताया गया है।

अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुर्विद्यायाः ।

इति शुश्रुम् धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१०॥

यजुः ४०.१३

अन्यत् एव आहुः विद्यायाः अन्यत् आहुः अविद्यायाः ।

इति शुश्रुम् धीराणाम् ये नः तत् विचक्षिरे इति विचक्षिरे ॥१०॥

(धीराणाम्) विद्वानों के (तत् विचक्षिरे) व्याख्यानों में (नः) हम (इति) यही (शुश्रुम्) सुनते आए हैं कि (ये) वह (अविद्यायाः) अज्ञान में जीने के परिणाम (अन्यत्) कुछ (आहुः) बताते हैं और (विद्यायाः) विद्या के दुरुपयोग अथवा उसको आचरण में न लाने के परिणाम (अन्यत्) कुछ और (एव) ही (आहुः) बताते हैं।

Tenth mantra advises about the harm from the ignorance or the improper use of knowledge.

**10. Om anyad-ev-aahur-vidyaayaa'
anyad-aahur-avidyaayaah
iti shushruma dheeraaṇaañ
ye nas-tad-vichachakṣhire**

Yajur 40.13

(nas) We (shushruma) hear from the (vi-chachakṣhire) discourses of the (dheeraaṇaañ) learned (tad iti) that (ye) they (aahuḥ) say, (avidyaayaah) living in ignorance brings (anyad) different results and (vidyaayaa) misuse of knowledge or failure to practically use the knowledge in one's own life brings (anyad) different results (ev) altogether.

ग्यारहवें मन्त्र में अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने का लाभ बतलाया गया है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥११॥

यजुः ४०.१४

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेदोभयम् सह ।

अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यां अमृतम् अश्नुते ॥११॥

(अविद्याम्) अज्ञान (च) और (विद्याम्) ज्ञान (उभयम्) दोनों ही (सह) एक चक्र में साथ साथ हैं। अज्ञानी ज्ञान प्राप्त करता है परन्तु जब तक वह ज्ञान जीवन में लागू न करे तब तक वह अज्ञान ही रहता है। जीवन में लागू करने के बाद उसको अपनी अज्ञानता का और अधिक (वेद) भान होता है और (यः) वह ज्ञान प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करता है । इस (अविद्यया) अज्ञान के (मृत्युम्) विनाश से (विद्यां) ज्ञान की और जाने के (तत्) सुचक्र से मनुष्य (तीर्त्वा) बन्धनों से तर (अमृतम्) मोक्ष को (अश्नुते) प्राप्त होता है।

Eleventh mantra discusses the benefit of moving from ignorance to enlightenment.

**11. Om vidyaañ cha-avidyaañ cha
yas-tad-ved-obhayam saha
avidyayaa 'mrityun teertvaa
vidyaya-amṛitam-ashnute**

Yajur 40.14

(obhayaṃ) Both (avidyaañ) ignorance (cha) and (vidyaañ) enlightenment (saha) coexist in a cycle. Ignorant may attain knowledge, however, until that knowledge is implemented in one's life ignorance persists. After implementation only (yas) one (ved) realizes that there is a need to learn more. (tad) This virtuous cycle, in which (vidyaya) enlightenment highlights the need for further enlightenment, leads to (teertvaa) freedom from (mṛityun) bondage of (avidyayaa) ignorance and (ashnute) attainment of (amṛitam) nirvaṇa.

बारहवें मन्त्र में जीवन के भोगों में रमे रहने वाले अथवा मृत्यु को आत्मा का अन्त मानने वाले, दोनों प्रकार के मनुष्यों के अन्धकारमय जीवन के बारे में कहा गया है।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।

ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्यां रताः ॥ १२॥

यजुः ४०.९

अन्धम् तमः प्र विशन्ति ये असम्भूतिमित्यसम्भूतिम् उपासन् इत्युपऽआसते ।

ततः भूयऽइवेति भूयऽइव ते तमः ये ऊँऽइत्युँ सम्भूत्यामिति सम्भूत्याम् रताः ॥ १२॥

(ये) जो लोग (असम्भूतिम्) मृत्यु को आत्मा का अन्त मान उसकी (उपऽआसते) उपासना करते हैं वे (अन्धम् तमः) अन्धकारमय जीवन (प्र विशन्ति) बिताते हैं और (ये) जो (सम्भूत्याम्) जीवन को ही इति मान सन्सारिक भोग विलास में (रताः) डूबे रहते हैं (ते) वे (ऊँ ततः भूयऽइव) गहनतम (तमः) अन्धकार में जीते हैं।

Twelfth mantra advises to look beyond the material pleasure and death and pray only to God who is truly worthy of our prayers.

12. Om andhantamaḥ pra vishanti

ye'sambhootim-upaasate

tato bhooya'iva te tamo

ya'u sambhootyaam rataaḥ

Yajur 40.9

(ye) Those who (upaasate) view (asambhootim) death as the end of soul (pra vishanti) remain in (andhantamaḥ) darkness and (ya) those who treat (sambhootyaam) life as ultimate and remain (rataaḥ) engrossed in the material pleasures, (te) they (bhooya) are (iva) even in (tato u) greater (tamo) darkness.

तेरहवें मन्त्र में कहा है कि जीवन के भोगों में रमे रहने वाले अथवा मृत्यु को आत्मा का अन्त मानने वाले, दोनों के भिन्न परिणाम हैं।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।

इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१३॥

यजुः ४०.१०

अन्यत् एव आहुः सम्भवादिति सम्भवात् अन्यत् आहुः असम्भवादित्यसम्भवात् ।

इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचक्षिरे इति विचक्षिरे ॥१३॥

(धीराणाम्) विद्वानों के (तत् विचक्षिरे) व्याख्यानो में (नः) हम (इति) यही (शुश्रुम) सुनते आए हैं कि (ये) वह (सम्भवात्) जीवन को सब कुछ मानने के परिणाम (अन्यत्) कुछ (आहुः) बताते हैं और (असम्भवात्) मृत्यु को आत्मा के अन्त मानने के परिणाम (अन्यत्) कुछ और (एव) ही (आहुः) बताते हैं।

Thirteenth mantra advises about different outcomes to being engrossed in the material pleasure and viewing the death as the end.

13. Om anyad-ev-aahuḥ sambhavaad-

anyad-aahur-asambhavaat

iti shushruma dheeraaṇaāñ

ye nas-tad-vi-chachakṣhire

Yajur 40.10

(nas) **We (shushruma) hear from the (vi-chachakṣhire) discourses of the (dheeraaṇaāñ) learned (tad iti) that (ye) they (aahuḥ) say, (sambhavaad) being engrossed in the material pleasure brings (anyad) different results and (asambhavaat) believing death as the end of the soul brings (anyad) different results (ev) altogether.**

चौदहवें मन्त्र में जीवन और मृत्यु चक्र का ज्ञान है।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥१४॥

यजुः ४०.११

सम्भूतिमिति सम्भूतिम् च विनाशमिति विनाशम् च यः तत् वेदोभयम् सह ।

विनाशेनेति विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्येति सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥१४॥

(सम्भूतिम्) जीवन (च) और (विनाशम्) मृत्यु (उभयम्) दोनों (सह) साथ साथ हैं। जन्म के साथ मृत्यु शुरू हो जाती है और मृत्यु के साथ ही जन्म, (तत्) यह (वेद) जान लेने वाला (यः) मनुष्य (सम्भूत्या) जन्म (विनाशेन मृत्युम्) मृत्यु चक्र से (तीर्त्वा) तर (अमृतम्) मोक्ष को (अश्नुते) प्राप्त होता है।

Fourteenth mantra touches upon the cyclical nature of life and death.

**14. Om sambhootiñ cha vinaashañ cha
yas-tad-ved-obhayam saha
vinaashena mṛityun teertvaa
sambhootya-amṛitam-ashnute**

Yajur 40.11

(sambhootiñ) Life (cha) and (vinaashañ) death (obhayam) both go (saha) hand in hand, with birth the process of aging and death starts and with death the process of new incarnation. (yas) That person who (ved) understands (tad) this cyclical nature, is (teertvaa) not bothered by the (vinaashena mṛityun) ups and downs of (sambhootya) life and (ashnute) attains (amṛitam) nirvaṇa.

पन्द्रहवें मन्त्र में अपने अन्तःकरण में छिपे सत्य के विषय में कहा गया है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

यजुः ४०.१७

तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितमित्यपिहितम् मुखम् ।

तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

(अपिहितम्) ढके हुए (मुखम्) मुख वाले (हिरण्मयेन) स्वर्णिम (पात्रेण) बर्तन अर्थात् हमारे अन्तःकरण में (सत्यस्य) सत्य छिपा है। (पूषन्) अपनी पुष्टि चाहने वाले मनुष्य! (त्वम्) तू (तत्) इस (सत्यधर्माय) सत्य को (दृष्टये) देखने के लिए (अपावृणु) अज्ञान के आवरण को दूर हटा दे।

Fifteenth mantra recognizes our own conscience as the repository of truth.

**15. Om hiraṇmayena paatreṇa satyasya-apihitam mukham
tat-tvam pooṣhann-apaavṛiṇu satya-dharmaaya dṛiṣṭaye**

Yajur 40.17

(hiraṇmayena) The golden (paatreṇa) vessel with its (mukham) mouth (apihitam) covered, hides (satyasya) the truth. (pooshann) O welfare seeker! This golden vessel is nothing but your own conscience. In order (dṛiṣṭaye) to see (tat) that (satya-dharmaaya) truth (tvam) you have to (apaavṛiṇu) remove the cover of ignorance.

सोलहवें मन्त्र में, संसार की चमक दमक से संयम पूर्वक ध्यान हटा कर उसके पीछे छिपी ईश्वर की व्यवस्था को जानने का उपदेश है।

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह ।

तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६॥

पूषन् एकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह । तेजः यत् ते रूपम् कल्याणतमम् तत् ते पश्यामि यः असौ असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ॥१६॥

(पूषन्) हे पुष्टिदाता! (एकर्षे) हे अद्वितीय ऋषि! (प्राजापत्य) प्रजा का पालन करने वाले! (यम) संसार को नियम में चलाने वाले! (सूर्य) प्रकाशवान! इस संसार में (व्यूह) फैले (रश्मीन्) चमक दमक वाले आकर्षण (समूह) को समेट लिजिए ताकि (ते) तेरा (यत्) जो (कल्याणतमम्) कल्याणतम (तेजः) तेजस्वी (रूपम्) रूप है (तत् ते) उस को (पश्यामि) मैं देख समझ सकूँ । ईश्वर उत्तर दे रहें हैं कि (यः) इस (असौ असौ) सब प्रकृति की व्यवस्था के पीछे जो (पुरुषः) बल है (सः) वह (अहम्) मैं (अस्मि) ही तो हूँ, आसक्ति से दूर हो मुझपर ही ध्यान लगाओ ।

Sixteenth mantra preaches that one should focus on God who is behind the material attractions of the nature.

**16. Om pooshann-ekarṣhe yama soorya
prajaapatya vyooaha rashmeen-samooaha
tejo yatte roopaṇ kalyaanataman tat-te pashyaami
yo'saav-asau puruṣaḥ so'ham-asmi**

(pooshann) O Nourisher! (ekarṣhe) O Supreme Knowledgeable! (prajaapatya) O Sustainer of all beings! (yama) O Creator and Upholder of the order in the Universe! (soorya) O Source of Illumination! Please (samooaha) roll away all of the (rashmeen) glittering attractions (vyooaha) spread over this World, so that (pashyaami) I can see and perceive (te) your (kalyaanataman) most beneficial (tejo) radiant (roopaaṇ) beauty. God responds to this prayer and says “look beyond the attractions as (puruṣaḥ) the entity (yo) that is behind (asaav asau) all of these attractions (so) that (asmi) is (aham) myself. Detach yourself from pleasure and focus on me.”

सतरहवें मन्त्र में सलाह दी है कि अपने जीवन के हर क्षण को अपने अन्तिम क्षण की तरह जियो।
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।

ओ३म् क्रतो॑स्मर कृत॑स्मर क्रतो॑स्मर कृत॑स्मर ॥१७॥

यजुः ४०.१५

वायुः अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तमिति भस्मऽअन्तम् शरीरम् ।

ओ३म् क्रतो॑ इति क्रतो॑स्मर कृतम् स्मर क्रतो॑स्मर कृतम् स्मर ॥१७॥

हे (क्रतो) कर्मशील मनुष्य! (अथ) निरन्तर हरेक (वायुः अनिलम्) श्वास में (ओ३म्) ईश्वर के नाम का (स्मर) स्मरण कर, अपने (कृतम्) किए हुए कर्मों का (स्मर) स्मरण कर। यह स्मरण मात्र अन्तिम समय में ही करने के लिए नहीं है। (इदम्) इस (शरीरम्) शरीर की सत्ता का (अन्तम्) अन्त (भस्म) भस्म में है परन्तु आत्मा (अमृतम्) अमर है।

Seventeenth mantra advises to live every moment of one's life as if it were the last moment before death.

17. Om vaayur-anilam-amṛitam-ath-edam

bhasma-antaṁ shareeram

o3m krato smara

klibe smara

kṛitaṁ smara

Yajur 40.15

O (krato) doer of deeds! With every (vaayur anilam) breath, (ath) continuously (smara) think of (o3m) God's name and also (smara) think of your own (kṛitaṁ) deeds. These thoughts are not be left for just the last breadth alone. (edam) This (shareeram) physical body (antaṁ) ends in the form of (bhasma) ashes however the soul is (amṛitam) deathless.

अठारहवें मन्त्र में प्रार्थना है कि प्रभु हमें बुराईयों से दूर कर धर्मानुकूल ज्ञान और धन प्राप्त कराइये।
अग्ने नय' सुपथा' रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥१८॥

यजुः ४०.१६

अग्ने नय' सुपथेति' सुऽपथा' राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नमऽउक्तिमिति नमऽउक्तिम् विधेम ॥१८॥

हे (देव) दिव्य (अग्ने) प्रकाशस्वरूप जगदीश्वर! हम (विधेम) विधिपूर्वक (उक्तिम्) प्रशंसाओं द्वारा (ते) आपको (भूयिष्ठाम्) बार-बार (नमः) नमन करते हैं। (विद्वान्) सब कुछ जानने वाले प्रभु (अस्मत्) हम लोगों से (जुहुराणम्) कुटिलतारूप (एनः) पापाचरण को (युयोधि) पृथक् कीजिए । (अस्मान्) हमें (सुऽपथा) धर्मानुकूल मार्ग से (विश्वानि) समस्त (वयुनानि) ज्ञान और (राये) धन (नय) प्राप्त कराइये।

Eighteenth mantra has a prayer to God to remove from us the evil tendencies and to help us obtain righteous knowledge and wealth.

**18. Om agne naya supathaa raaye'asmaan
vishvaani deva vayunaani vidvaan
yuyodhy-asmaj-juhuraanam-eno
bhooyishṭhaan te nama'uktim vidhema**

Yajur 40.16

O (deva) Divine (agne) source of all illumination! (bhooyishṭhaan) Repeatedly (vidhema) with devotion we (uktim) sing (te) your praises and (nama) bow to you. O (vidvaan) Omniscient God! Please (yuyodhy) take away (asmaj) from us the (juhuraanam) tendencies (eno) to transgress your laws. Guide us on (supathaa) the righteous path so that (asmaan) we can (naya) attain (vishvaani) all of (vayunaani) the knowledge and (raaye) wealth.